श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

Answer sheet

अभ्यासक्रम क्रं. : त्रितीय वर्ष ४

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

4

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर 2021

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	मूळ
(२)	अप्रमत्त संयत
(३)	जिनशासन
(४)	बृहद् शांति
(५)	कपाट
(६)	आलोचना
(७)	तत्वार्थभाष्य
(८)	कषाय
(९)	बहुजन दोष
(१०)	रूपातीत
(११)	श्रुतकेवली
(१२)	याकिनी महत्तरा
(१३)	शासन का उच्छेद
(१४)	श्री शांतिसूरि
(१५)	आत्मशुद्धि
(१६)	ध्यानरूपी
(१७)	संवरतत्व
(१८)	सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान
(१९)	आलंबन
(२०)	प्रकृर्वी

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	संज्ञी मनुष्य
(२)	अप्रमत्त संयत
(३)	आगम व्यवहारी
(४)	गुरु श्री जिनभद्रजी
(५)	आहारक समुद्घात
(६)	अव्यक्त दोष
(७)	सातवे गुणस्थान में
(८)	जिन साधु
(९)	तत्वार्थ सूत्र
(१०)	प्रमोद
(११)	जंबूलता
(१२)	जिनेश्वर
(१३)	अजित शांति स्तव
(१४)	मौन
(१५)	महर्षि पतंजलि
(५)	
(६)	मंदमंद
(७)	भावना
(८)	सात
(९)	अव्यक्त
(१०)	कपट
(११)	वेदना
(१२)	आकर
(१३)	संज्ञी
(१४)	निष्कपट
(१५)	जानकर
(१६)	सद्ध्यान
(१७)	कान देकर
(१८)	आचारवान
(१९)	अर्चित
(२०)	करके

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	दिन
(२)	सूर्य
(३)	वैक्रिय
(४)	जाकर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	९
(२)	८	(७)	३
(३)	१०	(८)	२
(४)	७	(९)	४
(५)	१	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	८
(२)	७६
(३)	३५७
(४)	७
(५)	५९
(६)	९
(७)	३२५
(८)	४
(९)	८
(१०)	१४४४

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	13
(२)	✓	(२)	६
(३)	×	(३)	20
(४)	✓	(४)	10
(५)	✓	(५)	2
(६)	×	(६)	१७
(७)	×	(७)	22
(८)	×	(८)	६
(९)	✓	(९)	१९
(१०)	×	(१०)	13

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________

प्रश्न - ८

१. देह में रहे हुये आत्मप्रदेश जोर से अचानक शरीर के बाहर निकले, ज्यादा पुराने कर्मपुद्गलोंकी उदीरणा कर, कर्मोंको भोगकर नाश करने की एक प्रकार की विशिष्ट प्रक्रिया वह जीव समुद्घात कहलाता है। चार अघाती कर्मों की स्थिती जब समान नहीं होती, नाम, गोत्र, आयु और वेदनीय कर्म स्थिति जब आयुकर्म से ज्यादा होती है, तब चारो कर्मोंकी स्थिति समान करने के लिये केवली भगवंत आयुष्य के अंतिम अंतर्मुहुर्त में आठ समय का केवली समुद्घात करते है। केवली समुद्घात से नाम, गोत्र, वेदनीय कर्म का अपवर्तना करण द्वारा बहुल विनाश होता है। अब नाम, गोत्र, वेदनीय कर्म की स्थिती आयुकर्म के स्थिति जितनी हो जाती है। केवली समुद्घात केवली भगवंतो को चार अघाती कर्मो की स्थिती समान नही होती तब होता है।

२. सद्ध्यान के तीन प्रकार है। १) आरंभक - बंदर की तरह चंचल होनेवाले मन को स्थिर करने के लिये निरंतर नासिका के अग्रभागपर जिन्होंने दृष्टि को स्थापन कर धीर बन वीर आसन में बैठकर निष्कंप समाधी लगाई है वे "आरंभक" है। २) संनिष्ठ - वायु आसन, इन्द्रिय, मन, क्षुधा, निद्रा को जीतता है और वारंवार अंतःकरण में मैत्री, प्रमोद, करुणा, माध्यस्थ भावना से भावित होता हुआ जीव 'संनिष्ठ' ध्यान मे प्रवेश करता है। ३) निष्पन्न योग - अंतःकरण मे से चिंतन को दूर कर मन में संपूर्ण विद्यारूपी अमृत को भरता है, जिसका चैतन्य निरंतर पान करता हुआ समाधि में लीन बनता है, वह "निष्पन्न योग" कहलाती है।

३. पू. हरिभद्रसूरि योग के बारे में विशेष ज्ञान होजाये ऐसे चार ग्रंथों की रचना की है। योग में विशेष रुची रखनेवाले जीवो के लिये उन्होंने विस्तृत रचना की है जो "योगदृष्टि समुच्चय" नाम से परिचित है जिसमें साडे सातसौ गाथा से ज्यादा श्लोक है। मध्यम रुचि के जीवों के लिए उन्होंने "योगबिंदु" और "योगशतक" नामक ग्रंथोंकी रचना की है, जीसमे क्रमशः तीनसौ और सौ गाथा है। इसमें भी अत्यंत संक्षिप्त रुचिवाले जीवो के लिए इन सबका सार सिर्फ बीस गाथा में किया है, जो "योगविंशिका" नाम से प्रसिद्ध है। योग के क्षेत्र में उनकी ये रचनाये महर्षि पतंजलि के "योगसूत्र" की रचना की याद दिलाता है।

४. आलोचना लेने से माया शल्य, नियाण शल्य, मिथ्यात्व शल्य जो अनंत संसार को बढ़ानेवाले है, उनका नाश होता है। सरलभावपना प्राप्त होता है। सरलभावपनासे आत्मा कपट रहित होता है। स्त्रीवेद, नपुंसकवेद नही बांधता है। पूर्वबांधे हुये कर्मो की निर्जरा होती है, क्षय होता है। आलोचना द्वारा आत्मशुद्धि होती है, जीससे अनेक पापों की परंपरा अटक जाती है। जो कर्म निकाचित होते है वो शिथिल बनते है, उनका क्षय हो सकता है। दुर्गति का निवारण होता है। सद्गति सहजता से होती है। आलोचना लेने से पाप का भार हल्का हो जाता है। इससे प्रमोद उत्पन्न होता है। स्वयं और अन्य के दोषो की निवृत्ति होती है। निष्कपटीपन आता है, जीससे आत्मा की शुद्धि होती है।

५. अरिहंत परमात्मा इनके नाम से ही हम जान सकते है की इन्होंने सब शत्रुओं को जीता है, जिससे इनकी स्तवना या स्तुति जो मन से करता है उसको किसका भी भय नहीं रहता है, उनकी स्तवना जीवन में शांति देती है। अरिहंत भगवान के प्रभाव से आरोग्य, लक्ष्मी, चित्त की स्वस्थता, सद्बुद्धि, सब क्लेश या पीडा का नाश होता है। अरिहंत भगवान के प्रभाव से क्या नही प्राप्त होता, ये पुछो। मतलब इनके अचिंत्य प्रभाव से इहलोक और परलोक के सब सुख प्राप्त होते है। और सबसे महत्वपूर्ण ये बात है की, ये सब सुख की प्राप्ती होते-